माउण्ट आबू-ज्ञान सरोवर। माननीय राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के साथ ज्ञान सरोवर निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. निर्मला दीदी, वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. सूर्य, राजयोगी ब्र.कु. नजंप्पा, ब्र.कु. गोतू, ब्र.कु. सुमन, ब्र.कु. सुभाष तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

पौधारोपण करते हुए राष्ट्रपति मुर्मू।

द्रौपदी मुर्मू को मोमेंटो भेंट कर सम्मानित करते हुए कार्यकारी सचिव राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय तथा ब्र.कु. लीना।

- पेज 1 का शेष...

'आध्यात्मिक सशक्तिकरण...

समुदाय के समाधान के लिए भारत की ओर देख रहा है। हमें कलियुग की मानसिकता को खत्म करना होगा और सतयुग की मानसिकता का आह्वान करना होगा। इसके लिए हम सबको मन में सत्वगुण को अपनाने का प्रयास करना होगा। दया और करुणा की भावना भारतवासियों के जीवन-मूल्यों में है। माउण्ट आबू से शुरु हुआ ये अभियान समस्त समाज को सशक्त बनाने में संबल प्रदान करेगा।

विज्ञान और अध्यात्म के ज़रिए विश्व में शांति स्थापन करें

राष्ट्रपति ने कहा कि इस धरती पर प्रत्येक मनुष्य मानसिक शांति के लिए प्रयास कर रहा है चाहे वो किसी देश, जाति, संप्रदाय का हो। शांति भी भोजन की तरह आवश्यक है। ब्रह्माकुमारीज़ शांति और आनंद के लिए मार्ग प्रशस्त कर रहा है। अध्यात्म ही वो प्रकाश पुंज है जो पूरी मानवता को सही राह दिखा सकता है। मेरा मानना है कि अमृत काल में 2047 के स्वर्णिम भारत के लिए आगे बढ़ते हुए हमारे देश को विश्व शांति के लिए विज्ञान और अध्यात्म दोनों का उपयोग करना होगा। हमारा लक्ष्य है कि भारत एक नॉलेज सुपर पावर बने। हमारी आकांक्षा है कि इस नॉलेज का उपयोग सस्टेनेबल डेवलपमेंट के लिए हो। सौहार्द महिलाओं और वंचित वर्ग के उत्थान के लिए हो, युवाओं के विकास, विश्व में स्थाई शांति की स्थापना के लिए हो।

उन्होंने कहा कि भारत इस समय जी-21 की अध्यक्षता कर रहा है जिसका थीम है "वसुधैव कुटुम्बकम" यानी 'वन अर्थ, वन फैमिली, वन फ्यूचर'। अपनी संस्कृति के आधार पर हमारा देश आध्यात्मिकता और नैतिकता के निर्माण के लिए सक्रिय है। बुद्ध, महावीर आदि शंकराचार्य और संत कबीर, महात्मा गांधी जी की शिक्षाओं ने पूरे विश्व को प्रभावित किया है।

ब्रह्मा बाबा ने महिलाओं की शक्तियों को पहचाना और विश्व शांति की बागडोर थमाई

ब्रह्मा बाबा ने जिस सोच के साथ महिलाओं को अग्रणी भूमिका दी, इसी तरह विश्व समुदाय को भी महिलाओं को आगे बढ़ाने की ज़रूरत है। अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने के साथ-साथ भारत शांति के अग्रदूत की भी भूमिका निभा रहा है। माउंट आबू से शुरू यह क्रांति देश के लोगों को आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनाएगा। माउंट आबू से जाकर बहनें पूरे विश्व में लोगों के अंदर विराजित शक्ति को पहचानने, सशक्त बनाने, ज्ञान देने और जागरुक करने का कार्य कर रही हैं।

इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी, अति. महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन, मल्टीमीडिया चीफ राजयोगी ब्र.कु. करुणा, कार्यकारी सचिव राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय, राजयोगिनी ब्र.कु. सुषमा दीदी ने भी संबोधित किया। राष्ट्रपति के मानपुर एयर स्ट्रिप पर पहुंचने पर सांसद देवजी पटेल, राज्य सरकार के प्रतिनिधि शिक्षा साहित्य पुरातत्व एवं कला मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला, विधायक संयम लोढ़ा, जगसीराम कोली, समाराम गरासिया व वरिष्ठ ब्र.कु. भाई-बहनों समेत कई लोगों ने स्वागत किया।

कुमार जीवन कमाल का जीवन...!!!

हमने सुना है, पढ़ा है, स्टूडेंट लाइफ इज़ द गोल्डन लाइफ। पर उसमें भी हमारा जीवन बालब्रह्मचारी जीवन हो तो सोने पे सुहागा है। क्योंकि बालब्रह्मचारी जीवन होना इस जीवन का एक श्रेष्ठतम चिन्ह है। यह हमारी अनमोल निधि है। हमारा परम सौभाग्य है कि कुमार जीवन में हमें ईश्वरीय सानिध्य प्राप्त है। जिसकी सराहना स्वयं शिव बाबा ने प्रजापिता ब्रह्मा के मुखारविंद द्वारा की है। ऐसे जीवन में हमारे अन्दर उत्पन्न होने वाले हर सृजनात्मक संकल्प सही दिशा में हों तो कोई भी कार्य असम्भव नहीं। पहचानें इस अनमोल निधि को...

राजयोगी ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

गीत की लाइन है ना कि "बाबा तुम्हारी शिक्षायें सदा हैं संग हमारे..." लेकिन प्रश्न यह आता है कि इस विद्यार्थी जीवन में जब हम आगे बढ़ते हैं, तो कुछ अनुभव पाने के बाद वह शिक्षा सामने नहीं आती, भूल जाती है। अगर वो शिक्षा सदा हमारे संग रह जाये तो वह हमें फरिश्ता बनाने वाली, अव्यक्त स्थिति में ले जाने वाली है। वह शिक्षा इतनी शक्तिशाली है, इतनी महान् है कि पुराने जीवन को मुड़कर कभी नहीं देखेंगे और उसकी कभी याद आयेगी भी नहीं, लेकिन 63 जन्मों के पुराने संस्कार जो पड़े हुए हैं, वो सबसे पहले आक्रमण करते हैं कि वह शिक्षा सामने न आये।

यह जो कुमार जीवन है, इसकी कितनी महिमा है! कुमार जीवन है ही विद्यार्थी जीवन। शिक्षा को सदा संग रखने वाला जीवन। हमें याद आता है कि बाबा किस प्रकार बार-बार इस जीवन की महिमा करते थे! कई दफा बाबा, मम्मा से तुलना करते हुए कहते, देखो, मम्मा, बाबा से आगे है। फिर उदाहरण देते हुए बाबा कहते कि देखो, मम्मा ने वो सीढ़ी उतरी नहीं, बाबा सीढ़ी उतरा है और उनको चढ़ना पड़ता है। बाबा की भाषा तो आप समझते ही हैं, इसका अर्थ आप समझ ही गये होंगे। बालब्रह्मचारी होना इस जीवन का एक श्रेष्ठतम चिन्ह है। यह हमारी अनमोल निधि है। यह हमारा परम सौभाग्य है कि कुमार जीवन में हम इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में आ गये जिसकी सराहना स्वयं शिवबाबा ने ब्रह्मा के मुखारविन्द द्वारा की। भगवान भी इस जीवन की महिमा करता है कि 'गॉडली स्टूडेन्ट लाइफ इज़ द बेस्ट लाइफ'(ईश्वरीय विद्यार्थी जीवन सर्वोत्तम जीवन है)। स्टूडेन्ट लाइफ में भी यह जो बालब्रह्मचारी जीवन है, उससे श्रेष्ठ और कोई जीवन है ही नहीं। यह है हमारे जीवन की प्लस प्वॉइंट, एक जबरदस्त सहायक प्वॉइंट है। लेकिन जैसे एक सीढ़ी होती है, उससे चढ़ा भी जा सकता है और उतरा भी जा सकता है। वह दोनों कामों के लिए इस्तेमाल हो सकती है। यह जो हमारा कुमार जीवन है, इसमें एक मुख्य बात है एनर्जी ग्रोथ। हम विज्ञान में पढ़ते हैं, डॉक्टरी में भी बताते हैं कि इस जीवन का विशेष एक चिन्ह है, विशेष एक लक्षण है विकास होना। वे कहते हैं कि शरीर का विकास होता है। बचपन और जवानी में यही अन्तर है, जवानी में शरीर का विकास होता, ग्रंथियों का विकास होता है जिससे मनुष्य के हाव-भाव, चेहरा और उसकी आकृति-प्रकृति बदल जाती है। उसके आचार, विचार और संस्कार, मस्तिष्क पर प्रभाव डालने लगते हैं। उसकी ध्वनि पर, उसके जीवन पर प्रभाव पड़ता है। एक शब्द में कहें तो उसके विकास पर प्रभाव पड़ता है। वही एनर्जी है, वही उसके समग्र विकास की सीढ़ी है। अगर उस एनर्जी को विकास की तरफ सीढ़ी चढ़ने के लिए इस्तेमाल न करें तो वही एनर्जी उतरने या पतन की ओर जाने की सीढ़ी है।

सार में, मनुष्य पतित बन जाता है, विकारी बन जाता है। मनुष्य किसी भी विकार के वश यदि हो, उसको पतित कहा जाता है। विकारों में जो सबसे पहले वाला है काम विकार, उसके वशीभूत को विशेष रूप से पतित कहा गया है। जो एनर्जी है उससे जो सीढ़ी नहीं चढ़ता बल्कि उससे उतरता है तो उसका नाम है पतन। हमें जो यह जीवन मिला है संगम का, इसमें सीढ़ी चढ़ने में इस शक्ति का इस्तेमाल करें। यह तभी हो पाता है जब बाबा की शिक्षा सदा हमारे संग रहे। अगर सदा साथ न रहे तो मनुष्य की जो पुरानी आदतें हैं, पुराने संस्कार हैं वे उसको खींचकर ले जाते हैं। इस कुमार जीवन में जहाँ शरीर का विकास या एनर्जी ग्रोथ मुख्य गुण होता है, वहाँ दूसरी बात हमने यह भी देखी है कि मनुष्य की एम्बिशन(महत्त्वाकांक्षा) होती है कि इस जीवन में हम कुछ न कुछ कर लें। हरेक व्यक्ति में एक जोश होता है कि हम कुछ करके दिखायें। कोई न कोई नवीनता हम करके दिखायें, कोई न कोई काम करके दिखायें। जहाँ एनर्जी होती है, वहाँ एनर्जी को इस्तेमाल करने की बात आती है जिसको हम इच्छा कहें या आकांक्षा कहें। लेकिन आप देखेंगे कि अन्य मनुष्यों की मत में और शिवबाबा की मत में महान् अंतर है। इच्छा के बारे में भी वहाँ और यहाँ अन्तर है। जैसे मनुष्य कहेंगे, जगत् बना ही नहीं है। बाबा क्या कहते हैं? जगत् हमारे सामने है, बना हुआ कैसे नहीं? वो कहेंगे कल्प की आयु करोड़ों-अरबों वर्ष है, बाबा कहते हैं, केवल पाँच हज़ार वर्ष है। वे कहते हैं कि आत्मा निर्लेप है, बाबा कहते हैं कि लेप-क्षेप आत्मा को ही लगता है। यह सारा अन्तर है।

इसी प्रकार मनुष्य-आत्मायें क्या कहती रहीं? इच्छाओं का दमन करते रहो। इच्छा को दबाने की कोशिश करो। लेकिन बाबा ने हमें क्या कहा? इच्छा मात्रम् अविद्या बनो। लेकिन बिना इच्छा के कोई कार्य होता ही नहीं। जब मनुष्य कोई कार्य करता है, पहले-पहले उसके मन में इच्छा ही उत्पन्न होती है। लेकिन कुमार अवस्था, युवा अवस्था की सशक्त विशेषता है कि मनुष्य की आकांक्षायें, इच्छायें बहुत प्रबल होती हैं, उत्कट(तीव्र) होती हैं। एक नहीं, अनेक उत्कट इच्छायें हैं। यह कर डालें, वो भी कर डालें, फलानी परीक्षा भी पास कर लें। फलाने तरीके से पैसा भी कमा लें। फलाने तरीके से ईश्वरीय सेवा भी कर लें। ये भी कर लें, वो भी कर लें। मनुष्य इतने प्लैन्स तो कर लेगा फिर कर पायेगा या नहीं, वह अलग बात है लेकिन बुद्धि चलती है, एनर्जी होती है, मन करता है कि हम कुछ करें, हमारा समय व्यर्थ जा रहा है, हमारी शक्ति व्यर्थ जा रही है, लेकिन ईश्वरीय सेवा करने से हमारा सौभाग्य बन जाता है।